शंकर थाने के के जीभ म्हारी घसगी भांग पीणे री काई जचगी

शंकर थाने के के जीभ म्हारी घसगी,
थारे भांग पीणे री काई जचगी।bd।

श्लोक – शिव समान दाता नहीं,
विपद विदारण हार,
लज्जा मोरी राखियो,
शिव नंदी के असवार।

शंकर थाने के के जीभ मारी घसगी,
थारे भांग पीणे री काई जचगी।bd।

धीरे-धीरे बोल पर्वता तू है मारी राणी,
गजानंद ने संग में लेले बोली मीठी बाणी,
मारे लहर लगी जमुना तट की,
थारे भांग पीणे री काई जचगी।bd।

थे तो मारा भोला शिवजी नित्य की पीओ भंग,
प्रभाते पीहर उड़ जासु होगी मैं तो तंग,
मारे हियामे करोती धसगी,
थारे भांग पीणे री काई जचगी।bd।

भांग पीणे रो भोला शंकर नसों पड़गो खोटो,
गजानंद किया छोड़ू ओ तो बालक छोटो,
अब बात कोनी है मारे बस की,
थारे सागे चालुली मारे जचगी।bd।

रामनिवास सतगुरु शरण चरणा चित लगाऊं,
नैया पार करो कब मेरी लीला थारी गाऊं,
अब बात कलेजा माही खटकी,
थारे भांग पीणे री काई जचगी।bd।

शंकर थाने के के जीभ म्हारी घसगी

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाईल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

थारे भांग पीणे री काई जचगी।bd।

स्वर – रामनिवास जी राव।
प्रेषक – सुभाष सारस्वत काकड़ा।
मोबाइल 9024909170

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com